सत्यमेव जयते

G20 भारत 2023 INDIA

कलाकृति

अर्धवार्षिक पत्रिका (2022-23)

अंक-6 (अक्तूबर से मार्च)

दिल्ली नगर कला आयोग

कलाकृति

अंक-6 (2022-23)

संरक्षक

श्रीमती रुबी कौशल
सचिव, दि.न.क.आ.

परामर्शदाता

श्री राजीव गौड़, सहायक सचिव (तकनीकी)

संपादक

श्रीमती कल्पना देवानी, हिंदी अनुवादक

सहायक

श्रीमती पारुल, कनसल्टेंट
श्री हिमांशु, कनसल्टेंट

संपादकीय पता
दिल्ली नगर कला आयोग
कोर 6 ए, यू जी एवं प्रथम तल
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

अनुक्रमणिका

संदेश

सरस्वती वंदना

पत्रिका का विमोचन

आयोग के कार्मिकों के लेख/कविताएं

आंतरिक परिचालन हेतु गृहपत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं।

अजित पई

अध्यक्ष, दि.न.क.आ.

संदेश

हिंदी हमारे देश की सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा है और विश्व की अग्रणी भाषाओं में से एक है । हिंदी की सहजता, सरलता और स्वीकार्यता ने इसे लोकप्रिय बनाया है । भारत के संविधान के अनुसार हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है ।

राजभाषा हिंदी का विकास और प्रगामी प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए हम सब को मिलकर प्रयास करना होगा । निर्धारित लक्ष्यों के अनुरुप हिंदी में कार्य के प्रचार-प्रसार करने के लिए कार्यालय प्रधान से लेकर नीचे स्तर तक सभी को अपना योगदान देना होगा ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

अजित पई

(अजित पई)

अध्यक्ष

मनदीप सिंह

सदस्य, दि.न.क.आ.

संदेश

भाषा हमारे असंख्य भावों विचारों तथा अनुभवों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है जिसके द्वारा न केवल हम दूसरों के विचारों और ज्ञान से अवगत हो सकते हैं अपितु अपने विचारों को अन्य जनमानस तक सरलता से पहुंचा भी सकते है । राजभाषा हिंदी न केवल देश की समृद्ध परम्परा की द्धोतक है बल्कि अपने वैज्ञानिक व्याकरण के कारण सर्वमान्य और स्वीकार्य भी है क्योंकि यह जैसी बोली जाती है वैसी लिखी भी जाती है ।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी ।

पत्रिका के सम्पादक मण्डल, रचनाकारों प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों-कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व मेरी शुभकामनाएं ।

मनदीप सिंह

(मनदीप सिंह)

सदस्य

आशुतोष कुमार अग्रवाल
सदस्य, दि.न.क.आ.

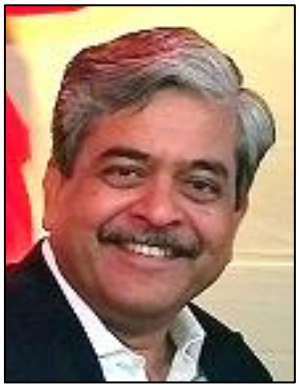

संदेश

हिंदी दिन-प्रतिदिन और अधिक ग्राह्य सरल और समृद्ध होती गई क्योंकि इसके प्रगामी प्रयोग और प्रचार-प्रसार के लिए सरकारी स्तर पर भी विभिन्न शोध, अनुसंधान और आई.टी टूल्स के माध्यम से प्रयास किये जा रहे हैं । जब तक हम इस बात का संकल्प नहीं करते कि इस देश का शासन, प्रशासन, ज्ञान और अनुसंधान हमारी भाषा में होगा, राजभाषा में होगा, तब तक हम इस देश की क्षमता का उपयोग नहीं कर सकते ।

मैं सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए आग्रह करता हूं कि वे पूर्व की भांति राजभाषा का अनवरत प्रवाह बनाए रखें ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

(आशुतोष कुमार अग्रवाल)
सदस्य

निवेदिता पांडे

सदस्य, दि.न.क.आ.

संदेश

देश में हिंदी के पक्ष में एक सकारात्मक माहौल का निर्माण हो चुका है । इसमें भारत सरकार अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वहन कर रही है । हिंदी हमारे देश की सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा है और विश्व की अग्रणी भाषाओं में से एक है । हिंदी की सहजता, सरलता और स्वीकार्यता ने इसे लोकप्रिय बनाया है । राजभाषा हिंदी का विकास और प्रगामी प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए हम सब को मिलकर प्रयास करना होगा ।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी ।

पत्रिका के रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुडे सभी अधिकरियों-कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं ।

निवेदिता पांडे

(निवेदिता पांडे)

सदस्य

सुरेन्द्रकुमार बागडे
अपर सचिव (डी), आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय
सदस्य, दि.न.क.आ.

संदेश

हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का सबसे शक्तिशाली एवं प्रभावी माध्यम है । हिन्दी में काम करने के लिए महत्वपूर्ण है कि भाषा को सरल एवं सहज रूप से लिखा जाए ताकि हिन्दी जानने वाले और हिन्दी न जानने वाले कर्मचारियों द्वारा आसानी से समझी जा सके तथा अपनायी जा सके ।

मुझे आशा है की यह पत्रिका पाठको के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में जहां एक ओर लेखन प्रतिभा बढ़ा कर उनके विचारों को मुखरित करेगी, वहीं दूसरी ओर उनमे अधिकाधिक सरकारी कार्य हिन्दी में करने की प्रवृति भी विकसित करेगी ।

सुरेन्द्र बागडे

सुरेन्द्रकुमार बागडे, अपर सचिव (डी),
आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय

रुबी कौशल

सचिव, दि.न.क.आ.

सचिव की कलम से

हमारा सदैव यह प्रयास रहा है कि राजभाषा का प्रचार-प्रसार एवं कार्यांवयन अनूठे तथा व्यवहारिक ढंग से हो, जिससे आयोग के प्रत्येक कार्मिक को हिंदी भाषा से जुड़ाव का अनुभव हो । सभी कार्मिकों से अपील है कि राजभाषा नीति से संबंधित प्रावधानों का कार्यांवयन सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी का निर्वहन करें, हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के अपने सवैधानिक और नैतिक दायित्व को निभाने का संकल्प लें । भाषा के अभाव में देश और समाज दोनों की कल्पना संभव नही है । भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम संचार का सेतु अथवा विचारों की अभिव्यक्ति ही नहीं बल्कि भाषा एक देश की वाणी है ।

कलाकृति पत्रिका में अपनी लेखनी की प्रतिभा के माध्यम से जो रचनाएं प्रकाशित कर रहे हैं, मैं उसके लिए शुभकामनाएं देती हूं ।

(रुबी कौशल)

सचिव

राजीव कुमार गौड़
सहायक सचिव (तकनीकी), दि.न.क.आ.

संदेश

भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिंदी को ही जाता है । आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में भी हिंदी की गूंज सुनाई देने लगी है । हिंदी आम आदमी की भाषा के रुप में देश की एकता का सूत्र है । सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायने में भारत की सम्पर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है ।

पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं ।

राजीव गौड़

(राजीव कुमार गौड़)
सहायक सचिव (तकनीकी)

कल्पना देवानी

हिंदी अनुवादक

सम्पादकीय

भारत विविधताओं का देश है । इसमें अनेक भाषाएं, धर्म, सम्प्रदाय तथा ज़ातियों के लोग निवास करते हैं । जिनकी अनेक भाषाएं और संस्कृतिक पम्परा है । समस्त विविधताओं के होते हुए भी हम सब एक हैं, फिर भी धर्म, प्रांत, भाषा, जाति और सम्प्रदाय के भेदभाव को दूर करना, हमारी एकता को सुदृढ़ करना तथा जनमानस में राष्ट्रप्रेम की जोत जगाना आवश्यक है । इसके लिए देवनागरी लिपि समूचे देशवासियों को मणिमाला की तरह एक सूत्र में बांधे रखने में सक्षम है । आयोग के विभिन्न राज्यों, परिवारों और भाषाओं के कर्मचारियों द्वारा लिखी गई रचनाओं से निर्मित है पत्रिका कलाकृति ।

कलाकृति परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पत्रिका के प्रकाशन की बधाई देती हूं । आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत है ।

कल्पना देवानी, हिंदी अनुवादक

सरस्वती वंदना

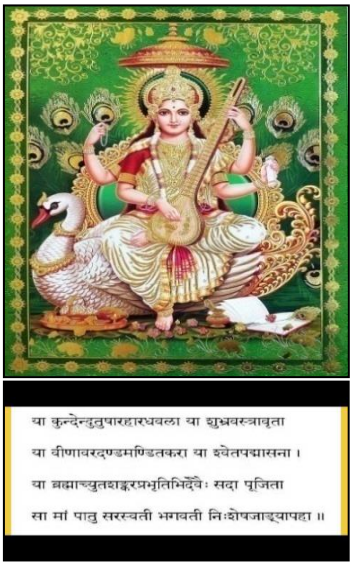

हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां ।
तू स्वर की देवी ये संगीत तुझसे
हर स्वर तेरा हर गीत तेरा
हम हैं अकेले हम हैं अधूरे
तेरी शरण हम, हमें प्यार दे मां ।
हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां ।

मुनियों ने समझी गुनियों ने जानी
वेदों की भाषा वेदों की वाणी ।
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें
विद्या का हमको अधिकार दे मां ।
हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां ।

तू श्वेतवर्णी कमल पर विराजे,
हाथों में वीणा मुकुट सिर पर साजे
मन से हमारे मिटा के अंधेरे
हमको उजालों का संसार दे मां ।
हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां ।

ख्वाब और हकीकत

****

कुछ ख्वाब, परिंदा बनकर अब पूरे करने हैं
कुछ सपने जो देखे इन आंखों ने साकार वो करने हैं
रोज़ की भाग दौड़ की ज़िंदगी को अब पूर्ण विराम लगाते हैं
चलो आज से नई सुबह का शुभारम्भ करते हैं
घर से ऑफिस का यह सफर लो समाप्त हो चला
कहीं और कुछ नवीन खोज में निकल जाते हैं ,
कहीं भ्रमण, यात्रा और सफर पर जाने की तमन्ना है
मन शांती, प्रसन्नता, एकाग्र चित पा जाये वहां, ये निश्चित है
अब कुछ अपने लिए भी समय निकालेंगे
जो मन कहेगा वो कर गुज़रेंगे, जहां कहेगा वहां जाएंगे,
नाम जपेगा तो भजन गाएंगे, कदम बड़ेगे तो तीर्थ कर आएगें
रिटायरमेंट को थकान जीवन की ना मानकर, स्फूर्तिदायक बनाएगें
योग और ध्यान में समय अधिक लगाएगें
इतने वर्षों का साथ है, एक झटके में तोड़ नहीं पाएगें
मन से याद करोगे, तो आप सबसे मिलने चले आएगें

कल्पना देवानी, हिंदी अनुवादक

“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता”

अत: जहाँ नारियों की पूजा अर्थात सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं । ये बात युग-युगों से नारीसम्मान को सार्थक करती है । लेकिन, बदलते समय के साथ नारी घर तक सीमित न होकर पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलते चलते अपनी खुद की पहचान, खुद की शक्ति से ही विमुख हो गयी । नारी को खुद से परिचित करवाने हेतू एक मामूली सा प्रयत्न अपनी कविता की कुछ पंक्तियों के द्वारा प्रस्तुत कर रही हूँ, मेरी कविता का शीर्षक है -

नारी का स्वयं से साक्षात्कार

तू खुद की खोज में निकल,
क्यों तू हताश है
तू चल तेरे वजूद की,
समय को भी तलाश है
जो तुझसे लिपटी बेड़ियाँ
समझ न इसको वस्त्र तू
ये बेड़ियाँ निकाल कर,
बना ले इसको शस्त्र तू
चरित्र जब पवित्र है,
तो क्यों है ये दशा तेरी
इन पापियों को हक़ नहीं,
कि ले अग्नि परीक्षा तेरी
तू खुद की खोज में निकल,
तू क्यों निराश है

तू चल तेरे वजूद की,
समय को भी तलाश है
जला कर भस्म कर उसे,
जो क्रूरता का जाल है
तू आरती की लौ नहीं
तू क्रोध की मशाल है
चूनर उड़ाके ध्वज बना
गगन भी कांप जाएगा
अगर तेरी चुनर गिरी
हिल जाएगी धरा तो एक भूकंप आएगा
खुद की खुद से पहचान कर,
तू सीता नहीं, विकराल काली है
कर संकलप विकट
समझ इस सार को
नर सिर्फ नर है
नर से भारी नारी है
तू अबला नहीं
जो आँखों में मोती, आँचल में पानी है
तू खुद की खोज में निकाल
क्यों तू हताश है
तू चल तेरे वजूद की,
समय को भी तलाश है।
समय को भी तलाश है.....

अलका धीर, निजी सचिव

पति-पत्नी की नोक झोंक.....

छूटा गिलास हाथ से तो
पति श्रीमती पर झल्लाए,
दिनभर मोबाइल लेकर तुम,
टें टें टें बतियाती हो...
खाक नहीं आता तुमको,
क्यू काँच अब तुम उठाती हो?

यह सुनकर पत्नी जी ने,
सारा घर सिर पर उठा लिया ।
पति देव को लगा कि ज्यों,
सोती सिंहनी को जगा दिया ।

अपने कामों का लेखा जोखा,
तुमको मैं अब बतलाती हूं ।
आओ तुमको अच्छे से मैं,
क, ख, ग, घ सिखलाती हूँ ।

सबसे पहले "क" से अपने,
कान खोलकर सुन लो जी..
"ख" से खाना बनता घर में,
मेरे इन दो हाथों से ही!

"ग" से गाय सरीखी मैं हूं,
तुम्हें नहीं कुछ कहती हूँ ।
"घ" से घर के कामों में मैं,
दिनभर पिसती रहती हूँ ।

पतिदेव गरजकर यूं बोले..
"च" से तुम चुपचाप रहो
"छ" से ज्यादा छमको मत,
मैं कहता हूं खामोश रहो!

"ज" से जब भी चाय बनाने
को कहता हूँ लड़ती हो..
गाय के जैसे सींग दिखाकर,
"झ" से रोज झगड़ती हो!

पत्नी चुप रहती कैसे,
बोली "ट" से टर्राओ मत
"ठ" से ठीक तुम्हें कर दूँगी...
"ड" से मुझे डराओ मत!

बोले पतिदेव सदा आफिस में,
"ढ" से ढेरों काम करूं...
जब भी मैं घर आऊं,
"त" से तुम कर देतीं जंग शुरू!

"थ" से थक कर चूर हुआ हूं...
आज तो सच कह डालूँ मैं!
"द" से दिल ये कहता है...
"ध" से तुमको धकियाऊं मैं!

बोली "न" से नाम न लेना,
मैं अपने घर जाती हूँ!
"प" से पकड़ो घर की चाबी
मैं रिश्ता ठुकराती हूँ!

"फ" से फूल रहे हैं छोले,
"ब" से उन्हें बना लेना ।
"भ" से भिंडी सूख रही हैं,
वो भी तल के खा लेना...!!

"म" से मैं तो चली मायके,
पत्नी ने बांधा सामान ।
यह सुनते ही पति महाशय,
के तो जैसे सूखे प्राण

बोले "य" से ये क्या करती
मेरी सब नादानी थी...
"र" से रूठा नहीं करो...
तुम सदा से मेरी रानी थी!

"ल" से लड़कर कहते हैं कि...
प्रेम सदा ही बढ़ता है!
"व" से हो विश्वास अगर तो,
रिश्ता कभी न मरता है ।

"श" से शादी की है तो हम,
"स" से साथ निभाएंगे...
"ष" से इस चक्कर में हम....
षटकोण भले बन जाएंगे!

पत्नी गर्वित होकर बोली,
"ह" से हार मानते हो!
फिर न नौबत आए ऐसी
वरना मुझे जानते हो!

"क्ष" से क्षत्राणी होती है नारी
"त्र" से त्रियोग भी सब जानती है
"ज्ञ" से हे ज्ञानी पुरुष! खत्म करो यह कहानी !

नेहा चौहान, वास्तुक सहायक

शक्ति चाहिए तो ज्ञान हासिल करो और सम्मान चाहिए तो चरित्र अच्छा करो।
- गौतम बुद्ध

लोग क्या कहेंगे

लोग क्या कहेंगे
ये भी बस अपनों से सुना है
मिली नहीं मैं कभी उन लोगों से,
जिनका नाम मैंने हर वक्त सुना है ।

ये जिन्दगी मेरी है या उन लोगों की
कोई बता दो मुझे ये जिसको भी पता है ।
सोचती हूं ख़तम कर दूं सारी ख्वाहिशें सारी कोशिशें
मेरी जिन्दगी अब मुझसे जो ख़फ़ा है ।

कौन से ल़फ्ज कहूं, मैं कौन सी कहानी लिखूं
मेरी महफिल मेरी नहीं, ये लोगों का मयखाना है ।
लोग क्या कहेंगे, ये मेरे ही अपनों का कहना है ।
लोगों ने तो हमेशा हंसते को हसाया है, रोते को रूलाया है ।

क्यों दी मुझे ये बदनसीब जिन्दगी ए खुदा
जब इसे दूसरों के हिसाब से ही जीना है मुझे ।
काट देते हैं वो पंख उड़ने से पहले
कौन हैं वो लोग मुझे अब उनसे मिलना है ।

जीना चाहती हूं अब ज़िन्दगी अपने तरीके से
उड़ना है, अब नहीं रूकना है मुझे ।
दो पल ही सही अब खुल के सांस तो लेने दे
क्या लोग बस मेरे ही सपनों पे फिदा हैं

लोग क्या कहेंगे
मुझे अब नहीं सुनना है ।

सुनीता रानी, उच्च श्रेणी लिपिक

31 अक्तूबर, 2022 को श्री दयाराम, एम.टी.एस. सेवानिवृत

आयोग, सेवानिवृत कार्मिक के स्वस्थ एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता है ।

एक दिवसीय संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

नवंबर 3, 2022 को एक दिवसीय संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में सचिव महोदया के साथ जाने का अवसर प्राप्त हुआ । पांच नदियों का शहर, स्वर्ण मंदिर का नगर, कार्तिक का महीना, कौन भला इस स्वर्णिम अवसर को अपने हाथ से जाने देगा और वागा बार्डर देखने का जोश मन में लिए हम विस्तारा एयरलाईंस से चल पडे ।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 03 नवंबर 2022 को संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की अध्यक्षता में गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में उत्तर-1 तथा उत्तर-2 क्षेत्रों में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों एवं उपक्रमों इत्यादि के लिए संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नराकास अमृतसर की अध्यक्ष एवं मुख्य आयकर आयुक्त, अमृतसर सुश्री जहांजेब अख्तर, मुख्य आयकर आयुक्त, एवं नराकास अध्यक्ष गाजियाबाद, डॉ. शुचिस्मिता पलाई, राजभाषा विभाग के निदेशक बी. एल. मीना तथा संयुक्त निदेशक डॉ. राकेश बी. दुबे सहित उत्तर-1 एवं उत्तर-2 क्षेत्र के विभिन्न कार्यालयों के अधिकारी शामिल हुए । कार्यक्रम में संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग ने बताया कि पूरे देश में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों एवं कार्यालयों आदि में राजभाषा संबंधी प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने तथा सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम भूमिका है । राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधानों का अनुपालन करने एवं सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग सतत प्रयासरत है और ये क्षेत्रीय सम्मेलन भी उसी दिशा में किए जाने वाले हमारे प्रयास हैं । उनका कहना था कि राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में कार्य करते हुए राजभाषा विभाग ने 13-14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया । साथ ही मई 2022 में पहली बार ही नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन भी राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित किया गया । डॉ मीनाक्षी जौली ने कहा कि इस वर्ष हिंदी दिवस-2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में किया गया जिसमें माननीय गृह मंत्री जी के नेतृत्व में पूरे देश भर से आए दस हजार से अधिक हिंदी प्रेमियों / हिंदी सेवियों ने हिस्सा लिया ।

कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग में तकनीक को निरंतर बढ़ावा दिया जा रहा है, राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ 2.0 का निर्माण और विकास किया है जिसका प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है । इस टूल में अब तक लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं और पिछले दिनों सूरत में संपन्न हुए राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह मंत्री जी द्वारा इसके नए वर्जन कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण भी किया गया है जिसमें अब न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन के साथ-साथ और भी अनेक नए फीचर्स जोड़े गए हैं जिससे इसकी उपयोगिता और भी ज्यादा बढ़ गई है ।

इसी कड़ी में राजभाषा विभाग की एक नई पहल है 'हिंदी शब्द सिंधु जिसका लोकार्पण माननीय गृह मंत्री जी के कर-कमलों से सूरत में संपन्न हुआ है और जिसमें अब तक लगभग 51,000 शब्दों को शामिल किया जा चुका है और उसे विभाग द्वारा निरंतर अपडेट किया जा रहा है और नए-नए शब्दों को शामिल कर उसे समृद्ध किया जा रहा है । अमृत महोत्सव के अवसर पर जारी इस शब्दकोश को

विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि क्षेत्रों से तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं से प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए तैयार किया गया है जो कि आने वाले समय में सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश के तौर पर कारगर होगा । डॉ जौली ने यह भी कहा कि राजभाषा विभाग द्वारा केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन पर नजर रखने के लिए देश के विभिन्न प्रमुख नगरों में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है । इस समय पूरे देश में इन समितियों की कुल संख्या 527 है । विदित हो कि आज आयोजित होने वाले क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के उत्तर-1 क्षेत्र में दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब तथा केंद्रशासित राज्य़ चंडीगढ, जम्मू और कश्मीर तथा लद्दाख राज्य तथा उत्तर-2 क्षेत्र में उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्यों के केंद्रीय कार्यालयों को पुरस्कार वितरित किए गए । इस अवसर पर अपने संबोधन में मुख्य अतिथि नराकास अमृतसर की अध्यक्ष एवं मुख्य आयकर आयुक्त, अमृतसर सुश्री जहांजेब अख्तर ने कहा कि भाषा की बात मन से होती है और संचार का सशक्त माध्यम है इसलिए भाषा का प्रयोग भी सचेतन होकर करना चाहिए । उनका कहना था कि इस ऐसा प्रयास होना चाहिए कि भाषा जोड़ने का माध्यम बने और हिंदी इस भूमिका का निर्वहन कर रही है । कार्यक्रम में बोलते हुए मुख्य आयकर आयुक्त, एवं नराकास अध्यक्ष गाजियाबाद, डॉ. शुचिस्मिता पलाई का कहना था कि हमें अधिक से अधिक कार्य हिंदी में कर अपने संवैधानिक दायित्व पूर्ण करने चाहिए ।

इस अवसर पर अतिथियों का स्वागत करते हुए राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय के निदेशक बी एल मीना ने कहा कि प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना पर आधारित संघ की राजभाषा नीति के अनुसरण में राजभाषा विभाग, देश के विभिन्न स्थानों पर क्षेत्रीय सम्मेलनों का आयोजन करता आ रहा है। वर्ष 1985 से निरंतर इन सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है और अब तक कुल 109 सम्मेलनों का आयोजन पूरे देश भर में किया जा चुका है । मीना जी ने बताया कि इन क्षेत्रीय सम्मेलनों का उद्देश्य राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आ रही समस्याओं का समाधान ढूँढना और इस दिशा में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को प्रोत्साहित करना है । धन्यवाद ज्ञापन राजभाषा विभाग के संयुक्त निदेशक श्री राकेश बी दुबे द्वारा किया गया, कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन राजेश श्री वास्तव, जी उपनिदेशक, रा.भा. ने किया ।

तुम भगवान में तब तक विश्वास नहीं कर सकते जब तक खुद पर विश्वास नहीं करोगे।

- स्वामी विवेकानंद...

केंद्रीय सूचना आयोग के 15 वें वार्षिक सम्मेलन में दि. 9 नवम्बर, 2022 को श्रीमती अल्का धीर, निजी सचिव और कनसल्टेंट, प्रशासन ने भाग लिया ।

उदासीनता बहुधा अपराध से भी भयंकर होती है।

- प्रेमचंद...

26.11.2022 (शनिवार) होने के कारण 25.11.22 को संविधान दिवस पर शपथ ली गई ।

प्रतिशोध आग की तरह होता है, वह जितना निगलता जाता है, उतना ही उसकी भूख बढ़ती जाती है।

- जे. एम. कोएट्जी...

सतर्कता सप्ताह के दौरान कार्यशाला का आयोजन किया गया । आयोग में सतर्कता दिशा निर्देश बताए गए ।

शाबाशियां

आवासन तथा शहरी कार्य मंत्रालय की ओर से आयोजित सतर्कता सम्बंधी पोस्टर प्रतियोगिता में आयोग के दो कार्मिकों ने अपनी प्रविष्टियां भेजी और पुरस्कार प्राप्त किये ।

आकाश सिहाग
(द्वितीय पुरस्कार)

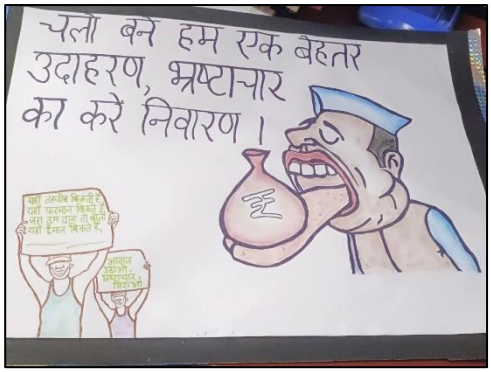

तान्या
(सांत्वना पुरस्कार)

अन्य गतिविधियां

अधिकारी तथा कर्मचारी व्यस्तता के बावजूद छोटे-छोटे खुशियों के पल एक साथ मनाते हैं ।

तुम्हें कोई पढ़ा नहीं सकता, कोई आध्यात्मिक नहीं बना सकता।
तुमको सब कुछ खुद अंदर से सीखना है।
आत्मा से अच्छा कोई शिक्षक नहीं है।

- स्वामी विवेकानंद

आयोग की पत्रिका का विमोचन

अधिकारिक भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करने और कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करने की दृष्टि से, दिल्ली नगर कला आयोग ने 'कलाकृति' शीर्षक से दिसम्बर माह 2022 को पत्रिका का विमोचन किया । इस अवधि का अंक-5 (अप्रैल से सितम्बर) आयोग द्वारा जारी किया गया । इस वर्ष से अर्धवार्षिक पत्रिका (2022-23) जारी की गई । पत्रिका में आयोग की विभिन्न गतिविधियों, समय-समय पर आयोजित बैठकों, कार्यशालाओं और राजभाषा माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं का संकलन है एवं सचित्र यात्रा संस्मरण भी शामिल किए गए हैं। तकनीकी लेख भी समाहित हैं जोकि आयोग के तकनीकी प्रस्तावों पर आधारित हैं । राजभाषा सम्बंधी ज्ञानवर्धक सूचनाएं भी समाहित की गई हैं । पत्रिका को, आयोग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के कलाकार बच्चों ने चित्रकारी तथा कला-कार्य को छुपे रुस्तम शीर्षक के अतंर्गत सुशोभित किया है ।

दिल्ली नगर कला आयोग की राजभाषा कार्यांवयन समिति की बैठक का आयोजन दि. 27.12.22 को किया गया । बैठक में मंत्रालय से निदेशक रा. भा. श्रीमती संतोष शिल्पोकर ने भाग लिया तथा मार्गदर्शन किया । बैठक में निम्नलिखित सदस्यों ने भाग लिया ।

1.	श्रीमती रुबी कौशल	सचिव, दि.न.क.आ., अध्यक्ष, रा.का.स.
2.	श्री राजीव कुमार गौड़	सहायक सचिव (तकनीकी), दि.न.क.आ., सदस्य सचिव, रा.का.स.
3.	श्रीमती अल्का धीर	निजी सचिव, सदस्य, रा.का.स.
4.	श्रीमती कल्पना देवानी	हिन्दी अनुवादक, दि.न.क.आ., सदस्य, रा.का.स.

गुलाब को उपदेश देने की आवश्यकता नहीं होती है।
वह तो केवल अपनी ख़ुश्बू बिखेरता है।
उसकी ख़ुश्बू ही उसका संदेश है।

- महात्मा गांधी

कार्यशाला आयोजन

27.12.22 को कार्यालयों की कार्यप्रणाली का बदलता स्वरुप और हिंदी कार्यशालाओं की भूमिका पर कार्यशाला आयोजन किया गया ।

कार्यशाला में राजभाषा सम्बंधी नियमों, मंत्रालय से समय-समय पर प्राप्त आदेशों, वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित पत्राचार सम्बंधी लक्ष्यों, कार्यालय द्वारा जारी पत्रिका और प्रोत्साहन सम्बंधी योजनाओं के विषय में व्यापक रुप में बताया गया । कार्यशाला कार्मिकों के लिए लाभदायक और ज्ञानवर्धक रही । राजभाषा के प्रचार-प्रसार में यह एक प्रशंसनीय प्रयास रहा ।

अतंराष्ट्रीय महिला दिवस

दिल्ली नगर कला आयोग में 10 मार्च, 2023 शुक्रवार प्रात: 11.00 बजे अतंराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया । श्रीमती मीरा खन्ना द्वारा नारी सशक्तीकरण पर व्याख्यान दिया गया जोकि सामाजिक कार्यकर्ता, लेखिका और कवियत्री हैं । Guild of Service-NGO की executive vice president भी हैं, She has served as a consultant to the High Level Committee on the Status on Women, She has authored two books on Kashmir, several papers on women's rights and presented papers at both national and international forums and the UN system.
सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को यह ज्ञानवर्धक, परस्पर संवादात्मक और रोचक लगा ।

जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप में कह नहीं सकता, उसी को क्रोध अधिक आता है।

- रवीन्द्रनाथ टैगोर

नींव का पत्थर

लालबहादुर शास्त्री बड़े ही हंसमुख स्वभाव के थे । लोग उनके भाषण और निस्वार्थ सेवा भावना जैसे गुणों से अनायास ही प्रभावित हो जाते थे । लेकिन जब वे लोकसेवा मंडल के सदस्य बने तो वे बहुत ज्यादा संकोची हो गए । वे नहीं चाहते थे कि उनका नाम अखबारों में छपे और लोग उनकी प्रशंसा और स्वागत करें ।

एक दिन शास्त्रीजी के मित्र ने उनसे पूछा "शास्त्रीजी, आपको अखबारों में नाम छपवाने से इतना परहेज़ क्यों ?

शास्त्रीजी कुछ देर सोचकर बोले," लाला लाजपतरायजी ने मुझे लोक सेवा मंडल के कार्य की दीक्षा देते हुए कहा था "लाल बहादुर, ताजमहल में दो प्रकार के पत्थर लगे हैं, एक बढिया संगमरमर के पत्थर हैं, जिनकों सारी दुनिया देखती है, एक नज़र नहीं आते, लेकिन ताजमहल को वे ही खड़ा रखे हुए है । "लालाजी के ये शब्द मुझे हर समय याद रहते हैं और मैं नींव का पत्थर ही बना रहना चाहता हूं ।

सौजन्य: साहित्य अमृत

प्रतिभाशाली लोगों की प्रशंसा की जाती है, धनवानों से ईर्ष्या की जाती है,
ताकतवर से डर लगता है, लेकिन केवल चरित्र वाले लोगों पर
ही भरोसा किया जाता है ।

- अल्फ़्रेड एडलर

ड्यूटी

रविवार का दिन था । छुट्टी का दिन, यानी सबकी ऑफिशियल छुट्टी ।
मां नाश्ता बना ही रही थी कि बेटे ने आकर कहा मां आप बहुत काम करती हो, एक दिन आपको भी आराम करना चाहिये, आज का खाना हम मैंनेज कर लेंगे, चलो आप आराम करो ।
बेटे की बात सुनकर मां की आखों में पानी आ गया, भला आजतक किसने सोचा था कि मांओं को भी आराम चाहिए, घर की औरतें खुद भी चौबीस घंटे का इमप्लाई ही मानकर चलती है ।
फिर भी बेटे ने ज़िद पकड़ ली तो कमरे में आकर आराम करने लगी । बहुत देर बीत गई, खाने के लिए किसी की आवाज़ नहीं आ रही थी, भूख भी तेज़ हो गई थी, मां उठकर रसोईघर में आई तो देखा, यहां तो कोई नहीं था ।
हैरानी से बेटे का दरवाज़ा खटखटाया बेटा खाने में क्या है, बेटा-बहू कोई फिल्म देखने में लगे थे, सुनते ही बेटे ने कहा, मां हम दोनों तो आज ब्रेड खा रहे हैं, आप अपना देख लीजिए क्या खाना है ।
'अरे, घर के बाकी लोग भी तो हैं, तेरे दादा-दादी हैं, ये क्या खाऐगें? मां परेशान हो उठी ।
बेटा बोला, आज सब अपना-अपना देख लेंगे, आप आराम करो बस ।'
मां ने सुना और चुपचाप रसोईघर में चली गई । इतनी जल्दी दाल चावल ही बन सकते थे, अत: वही बनाकर सबको परोस दिये ।
बेटे ने भी खाते हुए शिकायत के लहज़े में कहा "आपको कितना भी कहो, आराम नहीं होता, मैं बोला था न आप छुट्टी कर लो ।'
माँ मुस्करायी और बोली 'रहने दे बेटा, यह घर है, दफ्तर नहीं है ।'

सौजन्य: साहित्य अमृत

नववर्ष की सांझ

इन दिनों विहान बहुत ही उदास रहने लगा था । मम्मी पापा तो दफ्तर चले जाते हैं । स्कूल से घर लौटता तो मंजू आंटी (आया) आ जाती है, उसे बस से लेने । घर आता है, कपडे बदलता है, खाना खाता है और गृहकार्य करता है, इतने में उसकी मम्मी दफ्तर से लौटकर आ जाती है । सब कुछ अच्छा ही चल रहा है । किर भी विहान उदास ?

“चलो विहान आज हम मॉल जाएंगे, वहां गेम्स खेलेंगे, बाहर तुम्हारा मनपसंद खाना खाऐंगे । “

पापा ने कार स्टार्ट की और विहान मम्मी के साथ कार में बैठ गया ।
मॉल में रहे तब तक तो विहान प्रसन्नचित रहा, लेकिन घर लौटते ही पुन: उदास ।

अगले रविवार “चलो विहान, बच्चों की फिल्म आई है सिनेमा हॉल में । “

फिल्म देखते समय विहान खुश था, लेकिन घर लौटते ही पुन: उदास ।
उफ्फ ! क्या हो गया है इसे ? कुछ समझ ही नहीं आ रहा ।
मैं बताती हूं मेमसाहब जब आप घर पर नहीं होते न, विहान अल्मारी में से तस्वीर निकाल कर उससे बातें करता है ।

एक दिन मैने विहान के कमरे में आकर देखा तो एक तस्वीर उसके हाथ में थी । तस्वीर देखकर हम दोनों हैरत में पड़ गए । दरअसल यह विहान की दादी की तस्वीर थी, जिनका स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था । इसलिए उन्होने दादी को एक केयर सैंटर में भेज दिया था, ताकि वहां पर उनकी सार-सम्भाल हो सके ।

अगले रविवार “चलो विहान दादी से मिलने चलेंगे । “

विहान ने नए कपडे पहने, दादी द्वारा कढाई किया हुआ रुमाल अपनी जेब में डाला और कार में बैठ गया ।

केयर सैंटर में अपनी दादी को देखकर विहान उनसे लिपट गया । दादी-पोता दोनों की आंखो से आंसू बहने लगे । अपनी दादी को रोता देख विहान ने जेब से रुमाल निकाला और उनके आंसू पोंछ डाले ।

अब घर लौटते हैं विहान । मम्मी का स्वर सुनते ही विहान ज़मीन पर पसर गया । मैं दादी को लेकर जाऊंगा, वरना मैं भी यही रहूंगा । विहान ने ज़िद पकड़ ली थी । उसके पापा ने उसे गोद में उठाने की कोशिश की लेकिन वह तो दादी के पलगं का पाया पकड़कर अपनी ज़िद पर अड़ा हुआ था ।

परिजनों से मिलने का समय समाप्त होने लगा था, केयर सैंटर के इंचार्ज ने विहान के मम्मी-पापा से बाहर जाने के लिए कहा ।

बेटे विहान घर में दादी की सेवा के लिए कोई नहीं है, इसलिए हमने दादी को यहां छोडा है, अगले रविवार फिर से मिलने आ जाएंगे, अभी घर चलो ।

आपने मेरे लिए मंजू आंटी को रखा है न, वैसे ही दादी की सेवा के लिए भी आंटी रख दीजिए । लेकिन मैं दादी को यहां से लेकर ही जाऊंगा ।

हारकर विहान के पिता ने केयर सैंटरवालों से बात की और विहान की दादी को घर लेकर जाने की कारवाई पूरी की ।

“आप इन्हे कल यहां से लेकर जा सकते हैं । हम आपकी दरख्वास्त आगे पहुंचा देते हैं । केयर सैंटर इनचार्ज ने कहा ।“

लेकिन विहान ट्स से मस न हुआ । अब दादी ने विहान को गोद में उठाया और समझाया “विहान बेटा मैं कल आउंगी, आज मुझे यहां डा. से चेकअप करवाना है । अभी तुम अपने पापा के साथ घर जाओ । “

“कल पक्का आओगी ना घर ? विहान ने लाड में आंखे पोछते हुए पूछा । “
“हां मैं वादा करती हूं, कल नया वर्ष घर पर साथ में मनाऐगे । “

अगले दिन सोसाइटी में नव वर्ष की पार्टी थी, लेकिन विहान कहीं नज़र नहीं आया ।

“अरे विहान कहां रह गया? पार्टी में उसके दोस्त ढूंढ रहे थे । “

थोडी देर में विहान अपनी दादी का हाथ पकड़कर मुस्कुराता हुआ पार्टी में पहुंचा ।

सौजन्य: साहित्य अमृत

अन्याय होने पर चुप रहना, अन्याय करने के ही समान है।

- मुंशी प्रेमचंद

दादी के घरेलू नुस्खे

1. भोजन करके रात में ,
घूमें कदम हज़ार
डाक्टर ओझा वैद्ध का ,
लुट जाये व्यापार ।।

2. फल या मीठा खाइके
तुरंत ना पीजे नीर ,
ये सब छोटी आंत में
बनाते विष धर तीर ।।

3. घूंट-घूंट पानी पिये
रह तनाव से दूर ,
एसिडिटी या मोटापा
होवे चकनाचूर ।।

4. भोजन करें धरती पर
अल्थी-पल्थी मार ,
चबा चबा कर खाइए
वैद्ध न झांके द्वार ।।

सफलता की लड़ाई अकेली ही लड़नी पड़ती है,
सैलाब उमड़ता है जीत जाने के बाद।

- अज्ञात

छुपे रुस्तम कलाकार

तनुष गौड़, पुत्र श्री राजीव गौड़, सहायक सचिव (तकनीकी)

सोम्या, पुत्री श्रीमती मंजु अंजलि, वास्तुक सहायक

राजभाषा, अनुच्छेद तथा प्रावधान

संविधान सभा में राजभाषा पर तीन दिन की लंबी बहस के बाद 14 सिंतबर, 1949 को संविधान ने हिन्दी को सर्वसम्मति से राजभाषा का दर्जा दिया था. हमारे संविधान में भाग 17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा को लेकर विशेष प्रावधान हैं ।

अनुच्छेद 343

343 (1) -इस अनुच्छेद में कहा गया है कि भारत संघ की भाषा देवनागरी लिपी में हिन्दी होगी. संघ के सरकारी कार्यों में भारतीय अंकों के अंतराष्ट्रीय रूपों का प्रयोग होगा।

343(2)- इसमें कहा गया है कि संविधान लागू होने के 15 सालों तक यानी 26 जनवरी 1950 से 26 जनवरी 1965 तक अंग्रेजी भाषा सरकारी कार्यो में पहले की तरह इस्तेमाल होती रहेगी।

अनुच्छेद 344

इस अनुच्छेद में राजभाषा आयोग के गठन की बात कही गई है...इसमें कहा गया है कि संविधान के प्रारंभ से 5 और 10 वर्षों के खत्म होने पर देश के राष्ट्रपति हिन्दी के विकास और प्रयोग का जायजा लेने के लिए आयोग का गठन करेंगे. आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए 30 सदस्यों की संसदीय समिति गठित की जाएगी. इसमें लोकसभा के 20 और राज्यसभा के 10 सदस्य होंगे. समिति रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपेगी।

अनुच्छेद-345

इस अनुच्छेद में राज्यों की राजभाषाओं का जिक्र है. इसमें कहा गया है कि राज्यों के विधान मंडल अपने राज्य में सरकारी प्रयोजन के स्थानीय भाषा/भाषाओं या हिन्दी को अपनाएंगे. जब तक कानून द्वारा कोई प्रबंध नहीं किया जाता राज्य में अंग्रेजी पहले की तरह सरकारी कामों में प्रयोग होती रहेगी।

अनुच्छेद-346

इस अनुच्छेद में केंद्र और राज्यों के बीच संचार की भाषा को लेकर बात कही गई है. इसमें कहा गया है कि संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए उस समय जो भाषा मौजूद रहेगी वही भाषा राज्य और संघ के बीच संपर्क भाषा रहेगी. यदि दो या

अधिक राज्य आपसी सहमति से पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग करना चाहें तो कर सकते हैं ।

अनुच्छेद-347

इसमें राज्यों में दूसरे राजभाषा को लेकर बात कही गई है. इसमें कहा गया है कि अगर किसी राज्य का जनसमुदाय द्वारा बोली जाने वाली भाषा को शासकीय मान्यता प्रदान करने की मांग की जाती है तो राष्ट्रपति उस भाषा को राज्य के सभी या कुछ कामों के लिए मान्यता देने के आदेश दे सकते हैं ।

अनुच्छेद-348

यह अनुच्छेद बहुत महत्वपूर्ण है. इसमें उच्चतम न्यायालय/उच्च न्यायालय और अधिनियमों की भाषा को लेकर बात कही गई है. इसमें कहा गया है कि जब तक कोई व्यवस्था न की जाए तब तक हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट की भाषा अंग्रेजी में होगी. केंद्र और राज्यों के सभी विधेयक, अधिनियम, आदेश आदि का पाठ अंग्रेजी में होगा ।

अनुच्छेद-349

संविधान में प्रारंभ से 15 साल तक के दौरान हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट की कार्यवाही अंग्रेजी के अलावा किसी अन्य भाषा में करने के लिए कोई संशोधन लोकसभा/राज्यसभा में राष्ट्रपति की पूर्वानुमति से ही लाया जाएगा ।

अनुच्छेद-350

अनुच्छेद-350 कहता है कि कोई भी व्यक्ति अपनी परेशानिओं के लिए संघ या राज्य के किसी भी अधिकारी को उस समय इस्तेमाल होने वाली राजभाषा में आवेदन दे सकता है ।

इसके अलावा अनुच्छेद-350 (क) में कहा गया है कि भाषायी अल्पसंख्यकों के लिए प्राथमिक स्तर में मातृ भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की जाए ।

अनुच्छेद-351

संविधान के इस अनुच्छेद में हिन्दी के विकास के लिए कुछ निर्देशों का जिक्र है. इसमें कहा गया है कि हिन्दी भाषा के प्रचार ,विकास की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की होगी ।

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएं कौन सी हैं?

असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओडिया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगू, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएं हैं ।

G20 शिखर सम्मेलन

G20 शिखर सम्मेलन का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है । G20 ने शुरुआत में बड़े पैमाने पर व्यापक आर्थिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया, लेकिन इसके बाद में इसके एजेंडे का विस्तार किया गया और अब व्यापार, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, पर्यावरण और भ्रष्टाचार की समस्याओं को भी इसमें जगह मिल चुकी है । G20 शिखर सम्मेलन के दायरे तथा महत्व को देखते हुए, इसके प्रति जागरूक बनने की जरूरत बढ़ चुकी है ।

G20, 2023 का आयोजन साल 2023 में हमारे देश भारत में किया जा रहा है। G20 समिट की शुरुआत 22-25 फरवरी को बेंगलुरू में आयोजित होने वाली वित्त मंत्रियों और सेंट्रल बैंक गवर्नरों की बैठक से की गई ।

G20 शिखर सम्मेलन 20 प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की सरकारों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय मंच है । G20 की स्थापना वर्ष 1999 में अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग और विकास से संबंधित नीतिगत मुद्दों पर चर्चा और उनका समाधान करने के लिए की गई । G20 में प्रतिनिधित्व करने वाले 20 देशों का विश्व के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 85% और इसकी जनसंख्या का दो तिहाई हिस्सा-है। G20 के सदस्य देश हैं अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, यूरोपीय संघ, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, रूस, मैक्सिको, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, यूके और यूएसए । G20 भारत के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह देश को दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के साथ जुड़ने, अपने आर्थिक हितों को बढ़ावा देने और महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है ।

G20 भारत के लिए कई कारणों से महत्वपूर्ण है:

प्रतिनिधित्व: भारत G20 में शामिल 20 देशों में से एक है, जो इसे वैश्विक अर्थव्यवस्था से संबंधित नीतिगत मुद्दों पर चर्चा के लिए अंतर्राष्ट्रीय मंच में अपना पक्ष रखने का अवसर देता है। G20 सम्मेलन भारत को प्रमुख आर्थिक मुद्दों पर अपने दृष्टिकोण और राय साझा करने के साथ ही वैश्विक आर्थिक नीतियों की दिशा तय करने वाले मुद्दों पर राय देने का अवसर प्रदान करता है।

आर्थिक विकास: G20 भारत को दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के साथ जुड़ने और अपने आर्थिक हितों को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान करता है। भारत निवेश और व्यापार को आकर्षित करने के लिए G20 मंच का भरपूर लाभ उठा सकता है, जो इसके आर्थिक विकास और विकास को गति दे सकता है।

वैश्विक मुद्दे: भारत के लिए G20 जलवायु परिवर्तन, गरीबी और असमानता जैसे वैश्विक मुद्दों को संबोधित करने का एक महत्वपूर्ण मंच है। भारत इन मुद्दों का समाधान खोजने और सतत व समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए अन्य G20 देशों के साथ सहयोग कर सकता है।

वित्तीय स्थिरता: G20 समूह भारत के लिए भी प्रासंगिक है क्योंकि यह अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय स्थिरता को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है। भारत वित्तीय विनियमन और स्थिरता से जुड़े विषयों पर चर्चा में भाग ले सकता है, जो यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकता है कि वैश्विक वित्तीय प्रणाली स्थिर और लचीली बनी रहे और इसके हितों की अनदेखी न होने पाए।

G20 भारत को अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक नीतियों को आकार देने और अपनी वित्तीय स्थिरता को बढ़ाने में भाग लेने का अवसर भी प्रदान करता है। 2023 G20 शिखर सम्मेलन में कई प्रमुख मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किए जाने की उम्मीद है, जिसमें COVID-19 महामारी के बाद बनी वैश्विक आर्थिक संकट वाली स्थित से बाहर आने, स्थाई और समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और असमानता और गरीबी को दूर करने जैसे मुद्दे शामिल हो सकते हैं। नेता जलवायु संकट से निपटने, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रणाली को मजबूत करने और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय स्थिरता को बढ़ाने के तरीकों पर भी चर्चा करेंगे।

- 2023, G20 शिखर सम्मेलन में चर्चा के प्रमुख विषयों में से एक COVID-19 टीकों का रोलआउट और महामारी से निपटने के लिए चल रहे प्रयास होने की उम्मीद है। नेता महामारी को दूर करने की दिशा में किए गए प्रयासों और मध्यम आय वाले देशों के लिए टीके की खुराक के प्रावधान सहित कई बिंदुओं पर विचारों का आदान-प्रदान करेंगे।
- चर्चा का एक अन्य महत्वपूर्ण मुद्दा वैश्विक अर्थव्यवस्था को महामारी से उबारने और विकास को बहाल करने और रोजगार सृजित करने के लिए आवश्यक प्रयास होंगे। उन नीतियों को लागू करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो निवेश और व्यापार का समर्थन करती हों, डिजिटल परिवर्तन को बढ़ावा देती हों और छोटे और मध्यम आकार के उद्यमों के सामने आने वाली चुनौतियों का हल करती हों।
- 2023, G20 शिखर सम्मेलन नेताओं को जलवायु संकट को संबोधित करने और अधिक टिकाऊ और समावेशी भविष्य की दिशा में काम करने का अवसर भी प्रदान करेगा। शिखर सम्मेलन में आर्थिक विकास और रोजगार सृजन को बढ़ावा देते हुए हरित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के संभावित तरीकों पर चर्चा किए जाने की उम्मीद है।

  G20 शिखर सम्मेलन वैश्विक समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। नेता दुनिया की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक साथ आएंगे, जिसमें चल रही COVID-19 महामारी और एक स्थायी और समावेशी आर्थिक सुधार की आवश्यकता शामिल है। शिखर सम्मेलन नेताओं को विचारों का आदान-प्रदान करने और सभी के लिए बेहतर भविष्य की दिशा में मिलकर काम करने का अवसर प्रदान करेगा।

G20 शिखर सम्मेलन की प्रासंगिकता (Relevance of G20 Summit)

G20 शिखर सम्मेलन प्रासंगिक है क्योंकि यह दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के नेताओं को एक साथ आने और महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

- G20 देश दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद का 85% और इसकी दो-तिहाई आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो इसे अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग और इससे जुड़े निर्णय लिए जाने का एक महत्वपूर्ण मंच बनाता है।
- G20 शिखर सम्मेलन नेताओं को विचारों का आदान-प्रदान करने, नीतिगत समाधानों पर चर्चा करने और वैश्विक समुदाय की प्रमुख चुनौतियों के समाधान के प्रयासों का समन्वय करने की अवसर देता है। ये चुनौतियाँ आर्थिक मुद्दों जैसे मंदी, व्यापार और निवेश से लेकर गरीबी, असमानता और जलवायु परिवर्तन जैसे सामाजिक मुद्दों हो सकती हैं।
- G20 शिखर सम्मेलन इसलिए भी प्रासंगिक है क्योंकि यह सामूहिक प्रयासों को मंच प्रदान करता है। प्रतिनिधि उन नीतियों और पहलों को लागू करने के लिए मिलकर काम कर सकते हैं जिनका वैश्विक अर्थव्यवस्था और समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। उदाहरण के लिए, G20 ने 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट का जवाब देने और COVID-19 महामारी की वैश्विक प्रतिक्रिया के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सौजन्य: www.g20.org

होली, रंगों भरा त्योहार

होली, धुलेंडी और रंगपंचमी यह उत्सव दुनियाभर में विभिन्न नाम और रूप में मनाया जाता है। भारत के प्रत्येक राज्य में होली को अलग-अलग नाम से पुकारा जाता है और इसे मनाने के तरीके भी अलग-अलग हैं। आओ जानते हैं कि किस राज्य शहर में कैसे मनाते हैं होली।

1. **बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश :** बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश में होली को फगुआ या फाग कहा जाता है। यहां के कई शहरों में रंगों वाली होली के साथ ही लठमार होली खेलने का प्रचनल भी है। खासकर मथुरा, नंदगांव, गोकुल, वृंदावन और बरसाना में इसकी धूम रहती है।
2. **मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान :** मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में होली वाले दिन होलिका दहन होता है, दूसरे दिन धुलेंडी मनाते हैं और पांचवें दिन रंग पंचमी मनाते हैं। यहां के आदिवासियों में होली की खासी धूम होती है। मध्यप्रदेश में झाबुआ के आदिवासी क्षेत्रों में भगोरिया नाम से होलिकात्वस मनाया जाता है। भगोरिया के समय धार, झाबुआ, खरगोन आदि क्षेत्रों के हाट-बाजार मेले का रूप ले लेते हैं और हर तरफ फागुन और प्यार का रंग बिखरा नजर आता है।

   इसी प्रकार छत्तीसगढ़ में होली को होरी के नाम से जाना जाता है और इस पर्व पर लोकगीतों की अद्‌भुत परंपरा है। गली गली में नगाडे की थाप के साथ होरी शुरु होती है। बसंत पंचमी को गांव के बईगा द्‌वारा होलवार (जहां जलती है होली) में कुकरी (मुर्गी) के अंडे को पूज कर कुंआरी बबूल (बबूल का नया पेड़) की लकड़ी में झंडा बांधकर गाड़ने से फाग उत्सव प्रारंभ होता है। रंग भरी पिचकारियों से बरसते रंगों एवं उड़ते गुलाल में सभी सराबोर हो जाते हैं।
3. **महाराष्ट्र, गुजरात और गोवा :** महाराष्ट्र में होली को 'फाल्गुन पूर्णिमा' और 'रंग पंचमी' के नाम से जानते हैं। गोवा के मछुआरा समाज इसे शिमगो या शिमगा कहता है। गोवा की स्थानीय कोंकणी भाषा में शिमगो कहा जाता है। गुजरात में गोविंदा होली की खासी धूम होती है। महाराष्ट्र और गुजरात के क्षेत्रों में गोविंदा होली अर्थात मटकी-फोड़ होली खेली जाती है। इस दौरान रंगोत्सव भी चलता रहता है।

4. **हरियाणा और पंजाब :** हरियाणा में होली को दुलंडी या धुलेंडी के नाम से जानते हैं। पंजाब में होली को 'होला मोहल्ला' कहते हैं। हरियाणा में होली के दौरान भाभियां अपने प्यारे देवरों को पीटती हैं और उनके देवर सारे दिन उन पर रंग डालने की फिराक में रहते हैं। वहीं, पंजाब में होली के अगले दिन अनंतपुर साहिब में 'होला मोहल्ला' का आयोजन होता है। ऐसा मानते हैं कि इस परंपरा का आरंभ दसवें व अंतिम सिख गुरु, गुरु गोविंद सिंह जी ने किया था।

5. **पश्चिम बंगाल और ओडिशा :** पश्चिम बंगाल और ओडिशा में होली को 'बसंत उत्सव' और 'डोल पूर्णिमा' के नाम से जाना जाता है। डोल पूर्णिमा के अवसर पर भगवान की अलंकृत प्रतिमा की पालकी निकाली जाती है। नाचते गाते और एक दूसरे पर रंग डालते सभी लोग मौत मस्ती करते हैं।

6. **तमिलनाडु और कर्नाटक :** तमिलनाडु में लोग होली को कामदेव के बलिदान के रूप में याद करते हैं। इसीलिए यहां पर होली को कमान पंडिगई, कामाविलास और कामा-दाहानाम कहते हैं। कर्नाटक में होली के पर्व को कामना हब्बा के रूप में मनाते हैं। आंध्र प्रदेश, तेलंगना में भी ऐसी ही होली होती है।

7. **मणिपुर और असम :** मणिपुर में इसे योशांग या याओसांग कहते हैं। यहां धुलेंडी वाले दिन को पिचकारी कहा जाता है। असम इसे 'फगवाह' या 'देओल' कहते हैं। त्रिपुरा, नगालैंड, सिक्किम और मेघालय में भी होली की धूम रहती है। मणिपुर में रंगों का यह त्योहार 6 दिनों तक मनाया जाता है। साथ ही इस पर्व पर यहां का पारंपरिक नृत्य 'थाबल चोंगबा' का आयोजन भी किया जाता है।

8. **उत्तराखंड और हिमाचल :** यहां होली को भिन्न प्रकार के संगीत समारोह के रूप में मनाया जाता है, जिसे बैठकी होली, खड़ी होली और महिला होली कहते हैं। यहां कुमाउनी होली तीन प्रकार से खेली जाती है। पहला बैठकी होली, दूसरा खड़ी होली और तीसरा महिला होली। बसंत पंचमी के दिन से ही होल्यार प्रत्येक शाम घर-घर जाकर होली गाते हैं और यह उत्सव लगभग 2 महीनों तक चलता है।

सौजन्य:
www.hindikiduniya.com

हमारी धरोहर

पारुल कपूर, कनसल्टेंट

हाल ही में मैंने अपने दादाजी को खोया जोकि 90 साल के थे। उनके जाने से कई भावनाएं एक साथ जागृत हुइं। एक ओर, यह एक दुखद क्षण था क्योंकि वह हमेशा के लिए चले गए, और साथ ही वह धरोहर जोकि उन्होंने बनाई थी, दूसरी तरफ यह उनके शांतिपूर्ण जीवन की कामना करने की भावना, जहां वह लंबे समय तक जीए और हम सब के लिए यादें छोड़ गए । हम सभी जानते हैं कि दीर्घ आयु होना, (उन्होने 4 पीढ़ियों को देखा) आज की तारीख में एक विशिष्टता है (क्षतिग्रस्त पर्यावरण, खराब जीवन शैली और हमारे आस-पास के तनाव को देखते हुए) उनके जाने के बाद (लगभग 40 परिजनों का संयुक्त परिवार) संस्कृति, प्रतिभा और एकता का एक मिश्रित वंश वृक्ष रह गया ।

मेरे दादाजी और नानाजी दोनों, सिविल इंजीनियर थे । मैं सौभाग्यशाली थी कि मुझे (सबसे बड़े होने के नाते) अपने दादाजी के साथ काफी समय बिताने का अवसर मिला, और उनके साथ नाटक देखने, कला प्रदर्शनियों और वनस्पति उद्यान आदि जाने सहित मनोरंजक गतिविधियों का आनंद लिया।

इसी तरह, जब भी मैं अपने नानाजी से मिलने जाती थी तो वे निर्माण और डिजाइन के बारे में चर्चा करते थे (एक सामान्य कार्यक्षेत्र (डोमेन) ज्ञान जिसे हमने अपनी मां के साथ साझा किया, जोकि एक वास्तुकार भी हैं)।.. मैंने वास्तव में उनसे निर्माण के बारे में बहुत कुछ सीखा क्योंकि उन्होंने मुझे (आम आदमी की भाषा में) समझाया। मुझे याद है कि उन्होंने मुझे बताया था कि साइट पर पूर्व निर्मित मेट्रो ट्रैक सेक्शन कैसे जुड़े होते हैं और अब हर बार जब मैं मेट्रो लाइन पार करती हूं तो उनकी याद आती है । वह आध्यात्मिक व्यक्ति होने के नाते, स्थानीय मंदिर के निर्माण में भी शामिल थे और यह भी सुनिश्चित किया

कि जब भी हम आएं, तो मंदिर की साइट का दौरा करें ताकि वह गर्व से नए सुधारों को दिखा सकें ।

उपरोक्त चर्चा का सार यह है कि हमें अपनी परंपराओं और जड़ों को कभी नहीं भूलना चाहिए क्योंकि वे अज्ञात तरीकों से हमारे भविष्य को आकार देते हैं । तथ्य यह है कि मेरे पूर्वजों की निर्माण में पृष्ठभूमि थी और वे कला, संस्कृति और प्रकृति (अपने दृष्टिकोण के माध्यम से) की सराहना करने में सक्षम थे, जोकि मेरे व्यक्तिगत चरित्र में परिलक्षित हुआ, क्योंकि मेरे आरम्भिक वर्षों का रुझान अनजाने में कलात्मक पक्ष की ओर था । सत्य यह है कि मैं अपने आत्मिक रूप में प्रकृति से प्यार करती हूं, जोकि (शायद) मेरे पूर्वजों के धरती माता के प्रति प्रेम से उपजा है।

तो, क्या है जो खोने के बारे में हमें इतना दुखी करता है? यह तथ्य कि हम जुड़ जाते हैं और अपने बड़ों के साथ सीखने, तलाशने, सृजन करने और जश्न मनाने में इतना समय बिताते हैं जो कि, उन्हें हमारे जीवनचक्र का एक अनिवार्य हिस्सा बना देता है। सोचिए अगर हमें अपने दादा-दादी के साथ कभी नहीं रहते तो, कौन हमें लोककथा सुनाएगा, कौन हमें रीति-रिवाज समझाएगा, कौन त्योहारों का महत्व बताएगा, कौन हमें जीवन के टिप्स देगा (बेशक माता-पिता के अलावा) ।

परंपरागत रूप से, हम भारतीयों को संयुक्त परिवारों में पाला -पोसा गया है (एक प्रवृत्ति जोकि तेजी से बंद हो रही है और खंडित सेटअप वाले अधिक एकल परिवारों की ओर ले जा रही है) और इस प्रकार बड़ों के महत्व को समझते हैं।: परिवारों के मुखिया और निर्णय लेने के अलावा वे असंख्य तरीकों से हमारे जीवन को आकार देते हैं:

- वे हमारे वंश की कहानियां सुनाकर हमारे इतिहास को जीवित रखते हैं
- वे हमें बिना शर्त (माता-पिता से अधिक) प्यार करते हैं और अक्सर सभी परिस्थितियों में हमारा बचाव करते हैं।
- वे हमें अपने ज्ञान, बुद्धि और हास्य से समृद्ध करते हैं, जोकि किताबी ज्ञान से प्राप्त नहीं किया जा सकता है
- उनकी उपस्थिति और कार्य स्वत: ही हमारे व्यक्तित्व में परिलक्षित होते हैं और भविष्य के लिए हमें पोषित करते हैं

💮 वे हमें दया, सहानुभूति और निस्वार्थ कार्यों का प्रदर्शन करके (वास्तविक रूप में) जीवन का पाठ पढ़ाते हैं

ग़लती करने की बजाय देर करना कहीं अधिक अच्छा होता है।

- थॉमस जैफरसन

प्रश्नोतरी

प्र.1 हॉल ही में (जनवरी 2023) में पेप्सिको फ़ाउंडेशन और केयर द्वारा शी फीड्स द वर्ल्ड प्रोग्राम की शुरुआत किस देश में की गई ?

क) भारत

ख) नेपाल

ग) श्री लंका

घ) पाकिस्तान

प्र.2 राष्ट्रपति भवन में स्थित मुगल गार्डन का नाम बदलकर क्या रखा गया है ?

क) अटल उद्यान

ख) अमृत उद्यान

ग) गांधी उद्यान

घ) शक्ति उद्यान

प्र.3 भारतीय अंडर 19 महिला क्रिकेट टीम ने फाइनल में किस टीम को हराकर T-20 वर्ल्ड कप 2023 जीता ?

क) श्री लंका

ख) आस्ट्रेलिया

ग) इग्लैण्ड

घ) पाकिस्तान

प्र.4 निम्नलिखित में से किस संगठन कम्पनी ने हॉल ही में शिक्षा क्षेत्र में परिवर्तन लाने के लिए निति आयोग - अटल इनोवेशन मिशन (ए.आई.एम्) के साथ त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किये ?

क) केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

ख) इंटेल इंडिया

ग) विप्रो लि.

घ) क तथा ख दोंनों

प्र.5 भारत में सलाना 12 चीतों को भारत लाने के लिए किस देश के साथ समझौता ज्ञापन पे हस्ताक्षर किये ?

क) दक्षिण अफ्रीका

ख) केन्या

ग) नामिबिया

घ) तंज़ानिया

प्र.6 पांचवे खेलो इण्डिया यूथ गेम्स, किस स्थान में शुरु हुए ?

क) गुजरात

ख) मध्य प्रदेश

ग) महाराष्ट्र

घ) कर्नाटक

प्र.7 पुरुष हॉकी विश्व कप 2023 का टाइटल किस टीम ने जीता ?

क) जर्मनी

ख) बेल्जियम

ग) इग्लैंड

घ) आस्ट्रेलिया

प्र.8 आस्ट्रेलिया ओपन चैम्पियन 2023 का महिला सिंगल्स का खिताब किसने जीता ?

क) अरीना सबालेंका

ख) एलेना रायबकिना

ग) इंगा स्वेटेक

घ) करोलिना प्लिस्कोवा

प्र.9 आस्ट्रेलियन ओपन चैम्पियन 2023 मेंस टाइटिल किसने जीता

क) राफेल नडाल

ख) जेसन कुबतर

ग) नोवक जोकोविच

घ) सेफनीज़ शिर सियाम

प्र.10 2023 में किसके द्वारा एन.सी.सी. की 75 वें स्थापना दिवस पर स्मारक चिन्ह जारी किया गया ?

क) द्रोपदी मुर्मु

ख) नरेद्र मोदी

ग) राजनाथ सिंह

घ) अमित शाह

ऊत्तर:-

1. क 2. ख 3. ग 4. घ 5. क 6. ख

7. क 8. क 9. ग 10. ख

दिल्ली नगर कला आयोग
कोर - 6ए, यू. जी. तथा प्रथम तल,
भारत पर्यावास केन्द्र, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003
दूरभाष : 011- 24619593, 24690821